FEUDALISM(PART-3)

FOR U.G.PART-1,PAPER-2
BY:ARUN KUMAR RAI
ASST.PROFESSOR
P.G.DEPT.OF HISTORY
MAHARAJA COLLEGE
ARA.

पृष्ठभूमि

- सामंतवाद का विकास यूरोप में विशेष परिस्थिति में हुआ था। इसके स्वरूप रचनात्मक एवं विध्वंसात्मक दोनों ही थे। यद्यपि इस व्यवस्था ने तत्कालीन चुनौतियों का सामना कर काफी हद तक समय की मांग को पूरा किया और इस प्रकार यह एक ऐतिहासिक भूमिका निभाई फिर भी इस व्यवस्था में गुण तथा दोष दोनों विद्यमान थे।

सामंत प्रथा के गुण-

शांति सुव्यवस्था की स्थापना

- रोमन साम्राज्य के पतन के पश्चात अनेक बर्बर जातियों के आक्रमण के कारण यूरोप में जो अशांति एवं अव्यवस्था स्थापित हो गई थी उसे रोकने तथा पुनः यूरोप में शांति सुव्यवस्था स्थापित करने में इसने ऐतिहासिक भूमिका अदा की |इस प्रकार जन जीवन अब पहले की अपेक्षा अधिक सुरक्षित हो गया और प्रगति का अवरुद्ध मार्ग पुनः खुल गया|

सैन्य शक्ति का विकास

- सामंतवाद ने सैन्य संगठन को प्रोत्साहित किया। वस्तुतः सामंतों की शक्ति का आधार सेना थी अतः सामंतों ने अपनी सेना को समुचित ढंग से संगठित किया तथा वीरत्व भावना को प्रोत्साहन दिया। इस प्रकार हम देखते हैं कि यूरोप में सामंतवाद की शक्ति बढ़ी जो जनसाधारण की सुरक्षा में काफी सहायक सिद्ध हुई।

प्रशासनिक सुधार

- सामंत अपने जागीरो की शासन व्यवस्था के सुधार में भी विशेष रूचि लेते थे। सामंती प्रणाली में सैद्धांतिक रूप से राजा की सार्वभौम सत्ता को स्वीकार किया जाता था किंतु व्यवहार में सामंत अपनी जागीरो में लगभग स्वतंत्र थे।इस प्रकार इस व्यवस्था में सत्ता का विकेंद्रीकरण हुआ जिससे जागीरो में अच्छे शासन, न्याय और रक्षा का पर्याप्त प्रबंध हो गया ।दूसरी और राजा सामंतों पर पूरा नियंत्रण रखकर उनके पारस्परिक झगड़ों और उनकी निरंकुशता व अत्याचारों को भी रोक सकता था।

राजाओं की निरंकुशता पर नियंत्रण

- सामंतवादी व्यवस्था ने सामंतों में व्यक्तिवाद ,स्वतंत्र प्रियता और आजादी की भावना को विकसित किया जिसके फलस्वरुप राजा कानूनों का दुरुपयोग नहीं कर सकते थे।सामंतवाद ने राजतंत्र को निरंकुश होने से रोका । इंग्लैंड में **1215 ईस्वी** में सामंतों के दबाव के कारण ही इंग्लैंड का शासक **जॉन** को **मैग्नाकार्टा** पर हस्ताक्षर करना पड़ा था।

नागरिकता का पाठ

- सामंतवाद ने लोगों को नागरिकता का महत्वपूर्ण पाठ पढ़ाया ।यह व्यवस्था कुछ इस प्रकार थी कि सभी लोग अधिकार के तत्वों की बेड़ियों में जकड़े हुए थे। लोग अब इस सिद्धांत से परिचित हो गए थे कि कर्तव्य एवं अधिकार दोनों साथ चलते हैं तथा कर्तव्य से ही अधिकारों की प्राप्ति होती है।

आर्थिक प्रगति

- सामंतवाद ने आर्थिक प्रगति का भी मार्ग प्रशस्त किया ।यह व्यवस्था कृषि पर आधारित थी अतः इस व्यवस्था में कृषि के प्रगति पर विशेष ध्यान दिया गया। कृषि की उपज बढ़ने से ही सामंतों की आय में वृद्धि हो सकती थी अतः इस कारण से भी सामंतों ने कृषि कार्य में गहरी अभिरुचि का प्रदर्शन किया।उत्तम खेती करने के लिए सामंतों ने अपने से निम्न वर्गीय लोगों में भूमि का वितरण कर दिया ।कम्मियों तथा मनोरो के सहयोग से भी कृषि कर्म में विकास आया।

आर्थिक प्रगति

खेतों के आसपास गढ़ बनाकर सामंतों के रहने से फसलों को सुरक्षा मिली तथा उस की बर्बादी रुक गई। इस प्रकार कृषि की उन्नति से जन जीवन में खुशहाली आयी और देश समृद्ध हुआ ।सेना के आवागमन के उद्देश्यों से सामंतों ने पुरानी सड़कों की मरम्मत करवाई तथा नई सड़कों और पुलों का निर्माण करवाया। इस प्रकार आवागमन के साधन भी समुन्नत हुए तथा व्यापार को फलने फूलने का अवसर भी मिला।

शूर धर्म (Chivalry) का उदय

- सामंतवाद की श्रेष्ठतम उपलब्धियों में शूर धर्म की गणना की गई है ।यह सामंतवाद की एक महान देने है जिसे **सामंतवाद का पुष्प** कहा गया है। सामंत शूरवीर थे और अपनी सैनिक प्रतिभा से औसत श्रेणी के लोगों को चकित कर देते थे। उनके सारे सैनिक वीर थे ।युद्ध में कायरता दिखाना मर्दानगी के विरूद्ध समझा जाता था । देश की रक्षा के लिए सामंत तथा उनके सैनिक मर मिटने के लिए तैयार रहते थे। शूर धर्म से नारी के प्रति सम्मान ,असहाय के प्रति सुरक्षा और चर्च के आदर की भावना में वृद्धि हुई।

साहित्य का विकास

- सामंत काल में साहित्य का भी विकास हुआ। इस काल में साहित्य पर दो विचारधाराओं का प्रभाव पड़ा ।शूर धर्म की विचारधारा और रूमानी विचारधारा ।सामंत भूमि तथा रक्षा के नाम पर युद्ध लड़ा करते थे। इस प्रकार वीर रस की अनेक कहानियां तथा कविताएं लिखी गई । **रोलां की कहानी** सामंत युग कि एक अत्यंत प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय रचना है।**आर्थर** की कहानियां रोमांस की भावनाओं से युक्त है। इस काल में अधिकांश **सुखांत कविताओं** की रचना की गई। **ट्रावबेदौर** तथा **सिन्ने सिंगर** सामंतों के दरबार में जाकर प्रेम परक कविताओं का पाठ करते थे।

कला का विकास

- सामंत काल में कला की **गॉथिक शैली** काफी फली फूली। इस शैली में कल्पना की प्रधानता थी और यथार्थवाद गौण था ।कलाकारों ने चित्रकला का भी विकास किया और नारियों के अनेक चित्र बनाएं। इन चित्रों में सौंदर्य तथा प्रेम मुद्रा को उभारा गया। स्थापत्य कला का भी विकास हुआ ।इस काल के भवनों में वीरता की झलक देखने को मिलती है।

दर्शन का विकास

- यह युग दर्शन तथा दार्शनिकों के लिए भी जाना जाता है। **बेकन ,पीटर ,अबेलार्ड,अल्बर्ट मैगन्यूस**, **थॉमस एक्यून्स** दार्शनिक युग की महान विभूति थे ।इन दार्शनिकों के विचारधारा में तत्कालीन सामंती समाज उभरकर सामने आया।

सामंत प्रथा के दोष- केंद्रीय शक्ति का अवसान

- सामंतवाद के कारण यूरोप में केंद्रीय शक्ति का अवसान हुआ था ।सामंतों की शक्ति व्यापक रूप से बढ़ जाने के कारण राजा की शक्ति घट गई थी। राजा स्वंय अपनी सुरक्षा के लिए सामंतों का मोहताज हो गया। वह सामंतों की सेना पर पूर्णतः आश्रित था ।जनता तथा सैनिक राजा के प्रति निष्ठावान न होकर अपने सामंतों के प्रति आज्ञाकारी थे और स्वामी भक्ति की भावना रखते थे। केंद्रीय शक्ति की दुर्बलता आंतरिक अशांति एवं बाह्य आक्रमणों को प्रोत्साहित किया।

राष्ट्रीय एकता का लोप

- सामंतवादी व्यवस्था ने छोटे-छोटे राज्यों की स्थापना को प्रोत्साहित किया| केंद्रीय शक्ति के अभाव में सामंत अपनी-अपनी जागीरो में सर्व शक्तिशाली बन बैठे| उनके नेतृत्व में वस्तुतः देश अनेक छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों का समूह मात्र रह गया |विकेंद्रीकरण के इस वातावरण में राष्ट्रीयता की भावना का पूर्ण लोप हो गया|

किसानों की दयनीय स्थिति

- सामंती व्यवस्था शोषण के आधार पर खड़ी थी। किसान भूमि पतियों, चर्च तथा राज्य तीनों को कर देते थे। खेतों में अन्न उपजाकर भी ये भूखे रहते थे ।कम्मियों और मनोरो की दशा तो और भी सोचनीय थी ।बंधुआ मजदूर का जीवन बिता कर वे अन्य कष्टों का सामना करते थे। खेतों की बिक्री के साथ-साथ उनकी बिक्री भी हो जाती थी। ये शोषण के विरुद्ध ना तो शिकायत कर सकते थे और ना ही न्याय की मांग।

सामंतों में विद्रोह एवं पारस्परिक संघर्ष की भावना का विकास

- शक्तिशाली केंद्रीय सत्ता के अभाव में सामंतों में विद्रोह की भावना का बलवती होना तथा पारस्परिक युद्धों को प्रोत्साहन मिलना स्वभाविक था |एक ओर राजा की शक्ति जाती रही तो दूसरी ओर सामंत शक्तिशाली होते चले गए| जागीर की सेना और प्रजा अपने सामंतों के प्रति निष्ठावान थी |इस कारण शक्तिशाली सामंतों में विद्रोह की भावना पनपती थी| साथ ही ये सामंत इतने महत्वकांक्षी हो गए कि वे अपने पड़ोसी सामंतों पर आक्रमण कर उसकी जागीर हड़पने के लिए भी लालायित रहने लगे|

राजा इतना शक्तिहीन था कि उसे मध्यस्थता करने की क्षमता ही नहीं थी। इस प्रकार सामंती व्यवस्था में सामंतों में पारस्परिक संघर्ष की संभावना बनी रहती थी। मध्यकालीन यूरोप का इतिहास ऐसे विद्रोह तथा सामंतों के बीच होने वाले लंबे संघर्षों से भरा पड़ा है

दोषपूर्ण सैन्य संगठन एवं न्याय

- सामंती व्यवस्था के कारण यूरोपीय सेना में अनेक दोष उत्पन्न हो गए ।एक तो स्थाई कोई सेना नहीं होती थी दूसरी और सामंतों की छोटी सेनाएं अनेक सांगठनिक दोषों का शिकार बन गई। सामंत अपने -अपने ढंग से अपनी सेना को संगठित करते थे। इस प्रकार सैनिकों के अस्त्र-शस्त्र ,अनुशासन ,प्रशिक्षण तथा युद्ध के ढंग अपने ही तरह के होते थे। ऐसी सेना आपातकाल में कारगर सिद्ध नहीं हो सकती थी।
- न्याय के सिद्धांतों में काफी विषमता थी ।सामंत अलग-अलग ढंग से न्याय किया करते थे। कानून और सजाएं भी अलग अलग थी।

राष्ट्रीय राज्य के विचारों पर प्रहार

- सामंतवाद ने राष्ट्रीय राज्यों के विचारों को नष्ट कर दिया |इसने राजनीतिक एकता को समाप्त कर अपना आधिपत्य जमाया था और एकता के समाप्त हो जाने से राष्ट्रीय राज्य की धारणा नष्ट हो गई

सामाजिक वर्ग विभेद

- सामंतवाद ने सामाजिक वर्ग विभेद को काफी बढ़ावा दिया |सामंती समाज स्पष्ट रूप से दो वर्गों में बँट गया- एक ओर सारी सुविधाओं से युक्त सामंत थे जिनका जीवन ऐशोआराम तथा विलासपूर्ण होता था तो दूसरी और गरीब किसानों का जीवन अत्यंत कष्टदायक एंव निराशाजनक था। सामाजिक वर्ग विभेद तत्कालीन यूरोपीय समाज के लिए अभिशाप सिद्‌ध हुआ।

आर्थिक विकास में रुकावट

- आर्थिक प्रगति की दृष्टिकोण से भी सामंतवाद एक अभिशाप था। सामंत युद्ध प्रिय होते थे ।युद्ध के समय उनकी सेना किसानों की लहलहाती फसलों को नष्ट कर देती थी ।इसकी शिकायत सुनने वाला कोई नहीं था ।शिकार खेलते समय सामंत किसानों की फसल की परवाह नहीं करते थे । सामंत अपने ऐशोआराम तथा विलासपूर्ण जीवन में व्यस्त रहते थे। उन्हें आर्थिक प्रगति की कोई चिंता नहीं थी। उन्होंने उद्योग धंधों तथा व्यापार की ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। ऐसे वातावरण में आर्थिक प्रगति के मार्ग अवरुद्ध हो जाना स्वभाविक था।

सांस्कृतिक प्रगति में रुकावट

- सामंती व्यवस्था में निर्माण के अपेक्षा विनाश के कार्य अधिक हुए ।युद्ध सामंतों का प्रिय विषय बन गया। सामंती युद्ध सांस्कृतिक प्रगति के मार्ग में रोड़ा था। इस कारण से साहित्य एंव विभिन्न कलाओं में इस काल में विशेष प्रोत्साहन नहीं मिल पाया। बौद्धिक प्रगति के मार्ग भी अवरुद्ध हो गए।

चर्च एवं राज्य के बीच संघर्ष

सामंत प्रथा के कारण ही भविष्य में चर्च और राज्य के बीच संघर्ष पैदा हुआ जो सदियों तक चलता रहा ।चर्च तथा राजा के बीच होने वाले संघर्ष यूरोप के इतिहास का एक अविस्मरणीय अध्याय है।

कुल मिलाकर सामंतवाद देश तथा समाज के लिए लाभदायक होने की अपेक्षा हानिकारक अधिक सिद्ध हुआ।

To be continued......